ऋण मोचन मंगल साधना

कर्ज का भार व्यक्ति के जीवन में अभिशाप की तरह होता है, जो व्यक्ति की हंसती हुई जिन्दगी में एक विष बुझे तीर की भांति चुभ जाता है, जो निकाले नहीं निकलता और व्यक्ति को त्रस्त कर देता है। ऋण का ब्याज अदा करते-करते लम्बी अवधि हो जाती है, पर मूल राशि वैसी की वैसी बनी रहती है।

शुभ मुहूर्त में ऋण मोचन मंगल साधना करने से व्यक्ति कितना भी अधिक ऋण भार युक्त क्यों न हो, उसकी ऋण मुक्त होने की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। '

ऋण मोचन मंगल साधना को तो समय-समय पर सम्पन्न करते रहना चाहिए। ऋण को एक बोझ माना गया है, और इस बोझ से जल्दी से जल्दी मुक्ति प्राप्त करना ही श्रेष्ठ है। ऋण बोझ के प्रभाव से जीवन की गति बाधित हो जाती है, उसकी चेतना-चिन्तन का विषय विकास न होकर बोझ हो जाता है।

अथर्ववेद में ऋण को **'यम का पाश'** कहा गया है अर्थात् ऐसा बंधन जो मनुष्य को केवल आर्थिक रूप से ही नहीं बल्कि मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से भी जकड़ लेता है। वेदों में बार-बार यह प्रार्थना की गई है कि मनुष्य ऋण से मुक्त हो, क्योंकि ऋण केवल एक लेन-देन नहीं है, बल्कि यह जीवन की स्वतंत्रता को सीमित कर देता है। एक ऋण के न चुकाने पर अनेक ऋण उत्पन्न हो जाते हैं और यह क्रम धीरे-धीरे मनुष्य को भीतर से तोड़ देता है। इसी कारण शास्त्रों में कहा गया है -

'ऋणं कृत्वा न जीवेत्तु, ऋणं दुःखस्य कारणम्।'

ऋण लेकर जीना अंततः दुःख का ही कारण बनता है।

स्कन्द पुराण में भी अत्यंत स्पष्ट रूप से कहा गया है कि **जो व्यक्ति बिना ऋण चुकाए मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके पुण्य कर्मों का एक भाग ऋणदाता को प्राप्त होता है।** यह केवल धार्मिक सिद्धांत नहीं, बल्कि समाज में अनुशासन और उत्तरदायित्व बनाए रखने का एक गूढ़ संदेश है। इसका तात्पर्य यह है कि हम अपने कर्मों के फल के स्वामी तभी बन सकते हैं, जब हम अपने दायित्वों का पूर्ण निर्वाह करें।

इसी संदर्भ में रहीम का प्रसिद्ध दोहा जीवन के संबंधों की वास्तविकता को अत्यंत सरल शब्दों में प्रस्तुत करता है

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो उधार लगाय।
टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गाँठ पड़ जाय।।

उधार का संबंध प्रेम के धागे को कमजोर कर देता है। एक बार यह धागा टूट गया, तो वह पुनः जुड़ तो सकता है, लेकिन उसमें पहले जैसी सहजता नहीं रहती। यह बात आज के सामाजिक जीवन में अत्यन्त प्रासंगिक है, जहां रिश्ते अक्सर आर्थिक व्यवहार के कारण प्रभावित होते हैं।

वर्तमान परिदृश्य में ऋण

वर्तमान युग में मनुष्य का जीवन बाहरी और भीतरी दो स्तरों पर चलता है। बाहर से वह प्रसन्न, सफल और सम्पन्न दिखाई देता है, परन्तु भीतर से वह अनेक प्रकार के तनाव,

ऋण तीन प्रकार के होते हैं

1. **बीज रूप में ऋण इन्वेस्टमेन्ट या निवेश की भांति है, जैसे उच्च शिक्षा हेतु लिया गया ऋण, या फिर मकान खरीदने के लिए लिया गया ऋण, बीज रूप में है।**
2. **भोग रूप में वह ऋण है जो कन्ज्यूमरिज्म के चकाचौंध से प्रभावित होकर लिया जाता है। इस श्रेणी में क्रेडिट कार्ड पर लिया गया ऋण आता है। ऋण लेकर सुख सुविधाएं जोड़ने से आप अपने संतोष सुख और शांति को गिरवी डाल देते हैं। सामना खरीदने का आराम उस समय समाप्त हो जाता है जब आपके पास उस ऋण को चुकाने की क्षमता नहीं हो।**
3. **मजबूरी में ऋण निकट सम्बन्धियों से लिया जाता है एवं यह ऋण अत्यन्त पीड़ा दायक है। इसे लेने वाले व्यक्ति का स्वाभिमान हमेशा आहत रहता है।**

वास्तव में धन हर व्यक्ति के लिए आवश्यक है और अपने परिश्रम द्वारा वह सम्मान पूर्वक जीवन निर्वाह कर सके इतना तो अर्जन करने का प्रयास करना ही चाहिये। यही मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म है।

हालांकि बीज रूप में और मजबूरी में उधार मांगना जरूरी हो जाता है लेकिन यदि आप सिर्फ कामनाओं का पीछा करने के लिए उधार ले रहे हैं तो आप अपने आप को अकेला मत समझिए। आप जैसे हजारों हैं और आदि काल से हैं।

चिंताओं और आर्थिक दबावों से घिरा रहता है। कई बार यह स्थिति जन्म से ही उत्पन्न होती है जहां संसाधनों का अभाव होता है और उन्हें उचित अवसर नहीं मिल पाते। वहीं कुछ लोग अत्यधिक परिश्रम और ईमानदारी के बावजूद भी धन का संचय नहीं कर पाते।

किन्तु ये परिस्थितियां घातक नहीं हैं, क्योंकि परिश्रम, साधना, गुरु-कृपा और ईश्वर की अनुकम्पा से इनका समाधान संभव है। वास्तविक संकट तब उत्पन्न होता है जब मनुष्य अपनी वास्तविक आवश्यकताओं से अधिक, समाज में दिखावे और प्रतिस्पर्धा के कारण व्यय करने लगता है।

इस प्रकार की मानसिकता व्यक्ति को विवेकहीन बना देती है। वह यह भूल जाता है कि उसकी आय क्या है? उसकी क्षमता क्या है? और भविष्य की आवश्यकताएं क्या हैं? परिणामस्वरूप, वह धीरे-धीरे ऋण के जाल में फंसता चला जाता है।

कभी-कभी जीवन में ऐसी परिस्थितियां भी आती हैं जहां ऋण लेना अपरिहार्य हो जाता है। जैसे बीमारी, आकस्मिक दुर्घटनाएं या अन्य आपात स्थितियां। इन परिस्थितियों में ऋण लेना अनुचित नहीं है, क्योंकि जीवन की रक्षा सर्वो परि है। परंतु जब ऋण अनावश्यक इच्छाओं और दिखावे के कारण लिया जाता है, तब वह विनाश का कारण बनता है।

शास्त्रों में कहा गया है -

अलाभे न विषादः स्यात्, लाभे न अतिउत्साहः।
एतद् लक्ष्म्या निवासस्य, रहस्यं परमं स्मृतम्।।

हानि होने पर दुःखी न होना और लाभ होने पर अत्यधिक उत्साहित न होना। यही धन को स्थायी बनाने का रहस्य है।

लक्ष्मी को **'चंचला'** कहा गया है, परंतु यह चंचलता केवल उन लोगों के लिए है जो अस्थिर और असंयमी हैं। जो व्यक्ति धैर्यवान, संतुलित और संयमित होता है, उसके पास धन स्थिर रहता हैं। किंतु जब मनुष्य अपने आचरण, व्यवहार और अपव्यय से धन का अनादर करता है, तब वह धनहीन हो जाता है।

जब धन चला जाता हैं, तो उसके स्थान पर एक भयंकर स्थिति उत्पन्न होती है 'ऋण'। यह ऋण एक ऐसे दानव के समान है जो मनुष्य को अपने आठ भुजाओं से जकड़ लेता

है। वह न उसे चैन से जीने देता है और न ही शांति से मरने देता है। इसी कारण कहा गया है –

ऋणी जीवति दुःखेन, मृतोऽपि न सुखं व्रजेत्।

ऋणी व्यक्ति जीवन में दुःख भोगता है और मृत्यु के बाद भी शांति नहीं पाता।

अब प्रश्न उठता है कि **इस समस्या का समाधान क्या है? इसका उत्तर अत्यंत सरल, किन्तु व्यवहार में कठिन है – संकल्प और संयम। मनुष्य को यह दृढ़ निश्चय करना चाहिए कि वह आय के अनुसार ही जीवन व्यतीत करेगा। अनावश्यक खर्चों को रोकेगा और दिखावे से दूर रहेगा।**

धन की वृद्धि भी एक बालक के समान होती है– धीरे-धीरे, समय के साथ। यदि कोई व्यक्ति एक ही दिन में सब कुछ प्राप्त करना चाहता है, तो वह अवश्य ही गलत मार्ग की ओर जाएगा।

धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय।।

धैर्य और समय के साथ ही वास्तविक सफलता और समृद्धि प्राप्त होती है।

ऋण और मंगल ग्रह

ज्योतिषानुसार **ऋण की समस्या का सम्बन्ध मंगल ग्रह से जोड़ा गया है। मंगल अग्नि तत्व प्रधान, रक्तवर्णीय और दक्षिण दिशा का स्वामी ग्रह है। यह साहस, पराक्रम, भूमि, भाई-बंधु और ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करता है।**

मंगल मेष और वृश्चिक राशियों का स्वामी है तथा मकर में उच्च और कर्क में नीच का होता है। इसकी दृष्टि विशेष रूप से चौथे, सातवें और आठवें भाव पर होती है, जिससे यह जीवन के अनेक महत्वपूर्ण क्षेत्रों को प्रभावित करता है।

यदि मंगल शुभ स्थिति में हो, तो यह व्यक्ति को साहस, आत्मविश्वास और पराक्रम प्रदान करता है। परंतु यदि यह अशुभ हो जाए, तो यह क्रोध, विवाद, दुर्घटना, आर्थिक हानि और ऋण का कारण बन सकता है।

इसी कारण ज्योतिष में ऋण मुक्ति के लिए **'ऋणमोचक मंगल स्तोत्र'** का पाठ करने की सलाह दी जाती है। साथ ही, मंगलवार का व्रत, हनुमान जी की उपासना और दान-पुण्य भी मंगल के दुष्प्रभाव को कम करने में सहायक माने गए हैं।

हर व्यक्ति को ना सिर्फ अपना वित्तीय लक्ष्य मालूम होना चाहिए बल्कि उसके पास एक योजना भी होनी चाहिए, जिसके तहत वह अपने वित्तीय लक्ष्य को पूरा करेगा।

इस संदर्भ में यह सोच कि, कल किसने देखा है और समस्या आएगी तब देखा जाएगा यह नहीं चलेगा। यह तो समस्याओं से आंख मूंद लेने की बात है, क्योंकि जिन समस्याओं का, जिन मुश्किलों का हम सामना नहीं करते हैं, वे हमारे जीवन की कुरुक्षेत्र बन जाती हैं।

अतः अति आवश्यक स्थिति में ही ऋण लें और ऋण के भार को उतना ही सीमित रखें जितना आसानी से वहन कर सकें और समय पर ऋणों से मुक्ति प्राप्त कर सकें।

प्रत्येक मनुष्य के जीवन में तीन ऋण विद्यमान हैं, जिनसे वह आजीवन मुक्त नहीं हो पाता हैः देव ऋण, पितृ ऋण और गुरु ऋण। इन तीन ऋणों से मुक्ति तो असम्भव है, पर इनके प्रति सेवाभाव का निर्णय लेकर आप जीवन के कष्टों से मुक्ति पा सकते है। जब इन तीन ऋणों के अलावा आप अन्य किसी प्रकार का ऋण लेते है तो आपके जीवन का सुख चैन छीन लेते हैं। उधार की जिन्दगी और किश्तों में खरीदा सुख रिश्तों में कड़वाहट घोल देते हैं। आए दिन तनाव जनित क्रोध की अभिव्यक्ति, दाम्पत्य में घुलता खटास ऋण-जनित है। ऋण विष की तरह है जो आपके जीवन से अमृत चुरा लेता है। अमृत से ही अमरत्त्व की ओर बढ़ने में अर्थात् मृत्योर्मा अमृतगमयं की यात्रा पर बढ़ने के लिए ऋण मुक्ति अनिवार्य है।

– गुरुदेव नन्दकिशोर श्रीमाली जी

अंततः यह समझना आवश्यक है कि ऋण केवल आर्थिक समस्या नहीं है यह जीवन के असंतुलन का परिणाम है। जब मनुष्य अपने विचारों, व्यवहार और इच्छाओं पर नियंत्रण स्थापित कर लेता है, तब वह न केवल ऋण से मुक्त होता है, बल्कि एक शांत, संतुलित और समृद्ध जीवन की ओर अग्रसर होता है।

ऋण मोचन मंगल साधना

जब भी आप प्रयास करके भी ऋण रूपी बाधाओं से पार नहीं हो पा रहे हो तो ऋण मोचन मंगल साधना को किसी भी मंगलवार, किसी भी सर्वार्थ सिद्धि योग अथवा किसी भी शुभ मुहूर्त में प्रारम्भ किया जा सकता है।

इसके लिये प्रातः शुद्ध वस्त्र धारण कर, दक्षिण दिशा की ओर मुख कर लाल रंग के आसन पर बैठ जाएं, सामने एक बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर गुरु चित्र/विग्रह/यंत्र/पादुका स्थापित कर लें तथा गुरुदेव निखिल का पंचोपचार पूजन सम्पन्न करें।

निखिल पूजन के पश्चात् गुरु चित्र के सामने ही चावलों से एक त्रिकोण बनाकर उसके मध्य **'प्राण प्रतिष्ठा युक्त मंगल यंत्र'** स्थापित करें। फिर दाहिने हाथ में जल लेकर **विनियोग** करें –

ॐ अस्य श्रीभौमस्तोत्रस्य गर्ग्गऋषिः मङ्गलो देवता। त्रिष्टुप्छन्दः। ऋणापहरणे जपे विनियोगः।

विनियोग के पश्चात् मंगल कामना हेतु ध्यान करें –

रत्नाष्टा पद वस्त्र राशिममलं दक्षात्किरंतं करा-
दासीनं विपणौ करं निदधतं रत्नादिराशौ परम्।।
पीता लेपन पुष्प वस्त्र मखिलालंकार संभूषितम्।
विद्या सागरपारगं सुरगुरुं वंदे सुवर्णप्रभम्।।

इसके पश्चात् **मूंगा माला** से एक माला **मंगल गायत्री मंत्र** एवं एक माला **मंगल सात्विक मंत्र** का जप करें –

ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्ति हस्ताय
धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात्।।

भौम सात्विक मंत्र

ॐ अं अंगारकाय नमः।

इसके पश्चात् 9 माला भौम **तांत्रोक्त मंत्र** की **'मूंगा माला'** से करें –

ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।

यह साधना 7 दिवसीय साधना है जो मंगलवार से मंगलवार तक की है। 7 दिवसीय साधना के पश्चात् 7 मंगलवार तक ऋण मोचन मंगल स्तोत्र का पाठ करें।

साधना समाप्ति के पश्चात् सम्पूर्ण साधना सामग्री को घर से दूर कहीं भूमि में गाड़ दें। सामग्री गाड़ देने के पश्चात् सीधे अपने घर जाएं तथा पीछे मुड़ कर नहीं देखें।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. – 450/–